पंचम अध्याय

ब्रजमण्डल की लोकोसत्व कलायें

5.1 टेसू व झाँझी

5.2 न्योरता व साँझी

5.3 ब्रजमण्डल के लोकोत्सव गीतों का लोकोत्सव कलाओं के परस्पर सम्बन्ध

जैसा कि हम जानते है कि ब्रज के अधिकांश तीज–त्यौहार शुक्ल पक्ष में मनाये जाते है। किसी माह में थोड़ा कम तो किसी माह में ज्यादा मनाये जाते है। ब्रज के हर सप्ताह व महीने में कोई न कोई उत्सव चलता है। इसलिये ब्रज की प्रसिद्ध कलाऐं किसी ना किसी रूप में सामने आती रहती है। ब्रज धर्म भूमि है और विभिन्न कलाओं का यहाँ समागम है। चेत्र मास में नवरात्रि के अवसर पर सुन्दर कलाकृति में देवी चौक व रंगोली बनायी जाती है, दीवारों पर देवी का चित्र साथ ही मंगल कलश को सुन्दर सजाकर स्वास्तिक आलेखन पर रखा जाता है। उसके बाद देवी गीतों के साथ पूजा अर्चना की जाती है। इसी तरह ब्रज की कलायें हर रोज सा देखने को मिल जाती है। नागपंचमी व रक्षाबन्धन पर घर के दरवाजे पर नीचे गेरू से लीप पोलकर उस पर कोयले को दूध में पीसकर सुन्दर काले नागों को बनाना, सोना पूजन के समय सोना रखना या श्रवण कुमार का चिन्न बनाना ये सब में ही आता है।

हम देखते है कि राधा अष्ठमी व कृष्ण अष्ठमी पर भी बृज में जगह–जगह जहाँ भगवान श्री कृष्ण व राधा रानी की मूर्तियाँ, बलदाऊ वसुदेव देवकी, कृष्ण की लीलाओं युक्त मूर्तियाँ मिलती है। भगवान की झाँकियाँ निकालने के लिये उसमें लगने वाली साज सज्जा का समान जैसे– हिंडोले, झल्लर, फूल–पत्ती, वस्त्र आभूषण पेड़ व बेले मिलती है यह सब कलाकारी होती है। इसके बाद सुन्दर–सुन्दर टेसू व साँझी विभिन्न रंगों में न्यौरता व साँझी भिन्न–भिन्न रूपों में रंगीली दिखाई देती है। दशहरे के समय सीता राम व हनुमान आदि की जोड़ी या राम परिवार, रामलीला सम्बन्धी तीर–कमान, मुखोटे व पुतले बनते है साथ ही नवरात्रि की वजह से देवी के अलग–अलग रूपों में मूर्तियां दिखाई देती है।

करवा चौथ व अहोरी अष्टमी, दीवाली, गोवर्धन, भाईदूज, देवउठान, एकादशी पर, घर की दीवारों पर बृजवनितायें गेरू से पोतकर चावल के आटे के घोल से करवा चौथ माता व उसकी श्रृंगार का समान, सूर्य, चन्द्र, तुलसी पेड़

पर छलनी में चाँद दिखाता भाई, बहन विभिन्न देवी–देवता, अहोई पर आहोई माता का चित्र, दिवाली पर लक्ष्मी गणेश व गोवर्धन पर जमीन पर गाय के ताजे गोबर से गोवर्धन महाराज का सुन्दर रूप बनाया जाता है। दूसरे दिन ही उसी जगह पर गोवर्धन उठाने के बाद रंग गुलाल से चौक बना के आंगन में देव उठाने से पहले गेहूं व चावल के आटा का घोल बना सुन्दर देवोत्थान बनाये जाते है। सभी सदस्यों के पैर व सूरज चन्दा व घर की हर दरवाजे की देहरी को सुन्दर डिजाइन में सजाया जाता है। यह सब कन्या व नारियाँ ही करती है। इसके बाद विवाह संस्कार शुरू हो जाते है। विवाह के समय दीवारों पर लड़के या लड़की के हल्दी लगे थापे लगाये जाते है।

मण्डप और माड़े को गाड़ने के लिये जमीन पर चौक लगाया जाता है। दुल्हन को गृह में प्रवेश कराने से पहले देहरी पुजाने के लिये दरवाजे पर बनी घोड़ी या छबरिया व स्वास्तिक पुजाये जाते है। उसको पैरों के लाल निशान के साथ प्रवेश कराना ये सब कलाये है। बच्चे के जन्म के समय दीवार पर गोबर से साँतिया–चरूआ रखना, दीवार पर छटी माता बनाना, छबरिया बनाना, बसन्त पंचमी से सरस्वती पूजन के बाद होलिका के लिये सड़को व खाली मैदान में रंगों से बड़ा चौक लगाना फिर होलिका के लिये लकड़ी–कन्डे रखना। घर के आंगन में तरह–तरह के फुलैरा दौज का चौक लगाना व उसको फूलो से सजाना, सब लोक कलाऐं है। इसी के साथ बहुत सी कलायें ऐसी होती जो पूजन की सामिग्री में प्रयोग की जाती है। जैसे– आम्र के पत्र की बन्दन वार हरितालिका तीज की कथा में यह स्पष्ट है, पाँच पत्ते के साथ नारियल में लगा कलश पर रखना जिसे मंगल कलश कहा जाता है। जैसे मंगल कलश में पंच पल्लव रखे जाते है। जिसमें आम्र के अतिरिक्त पीपल, बड, गूलर, अशोक के पत्ते रखे जाते है। इनके अभाव में आम्र–पल्लव पर्याप्त होते है।

सत्यनारायण की कथा में केले के खम्भों का पूजन करते समय देवता के दोनों ओर रखने का वर्णन है। कहीं–कहीं केले के पत्ते पर भोजन व प्रसाद भी

रखने के प्रयोग में लिया जाता है। इसी के साथ पान, सुपारी, चावल, रोली, कलावा, कपूर, घी, धूप सभी सामिग्री से घर की रीतिरिवाज में ब्रज की वनितायें प्रयोग में लाती है। ब्रज की कलाओं में ज्यादा से ज्यादा भीती चित्र व भूमि चित्र वहाँ की लोक कथाओं व त्योहारों के अनुसार ही बनते है। और इनके साथ कथाओं में भी इनकी आस्था अवस्था जुड़ी रहती है। सभी कथाओं में नारियों का बड़ा योगदान होता है। गीत संगीत से घर त्यौहार व उत्सव का समापन होना ये आम बात हो गयी है। ब्रज की बनिताओं अपने रीतिरिवाज के विश्वास में होती है। इसलिए यहाँ के हर तीज त्यौहार में स्वयं को शामिल कर प्रसन्न होती है। आज उन्हीं की वजह से ब्रज की लोकउत्सव कलाऐं जीवित है।

5.1 टेसू व झैंझी –

अश्विन मास के पितृपक्ष की सांझी त्यौहार के बाद नवरात्रि के नवमी से प्रारम्भ होकर पूर्णमासी तक खेला जाने वाला यह त्यौहार बृज के बालक–बालिकाओं का प्रसिद्ध त्यौहार है। ब्रज में टेसू व झैंझी की कथा के लिये महाभारत के प्रमुख यौद्धा बभ्रुवाहन से जोड़ी जाती है। डॉ. विमला वर्मा एवं जितेन्द्र सिंह जी ने अपनी पुस्तक ''ब्रज की लोक कलाओं'' में पेज नं. 20 पर इस किंवदती के विषय में लिखा है कि टेसू पांडव सेना का वीर यौद्धा था, और उसे अपने बल पर बहुत घमण्ड था इसी कारण उसने श्रीकृष्ण जी का अपमान भी किया था जिससे कृष्ण जी रूष्ट हो गये और अपने सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट दिया था। उसकी अंतिम इच्छा थी कि वह पूरा युद्ध देखे। घमण्डी यौद्धा का अनुरोध मानकर उसके सिर को तीन खपच्चियों के साथ युद्धभूमि में खड़ा कर दिया था। उसकी प्रेमिका झैंझी नरकासुर की अतिसुन्दर कन्या थी लेकिन सिर कट जाने के कारण उसका विवाह बभ्रुवाहन से नहीं हो सका था फिर भी वह युद्धभूमि में उसके पास खड़ी थी। युद्ध समाप्ति पर श्रीकृष्ण ने दोनों का विवाह करा दिया। तभी से बच्चे इस त्यौहार को मनाते है।[1] इसके अलावा लक्ष्मी नारायण तिवारी जी ने 'चौमासा' के पृष्ठ सं.–63–64 पर लिखा है कि

टेसू के सम्बन्ध में ब्रज मण्डल में यह जनश्रति है कि कृष्ण काल में टेसू नाम का एक राक्षस था जो कि सखी रूप धारण करके नृत्यरास में पहुँच गया था क्योंकि पुराणों के अनुसार रास में पुरूषों का जाना एवं पुरूष रूपी भाव लेकर जाना वर्जित है किन्तु टेसू रास में जाने से पूर्व सखी का श्रृंगार करते समय गलती से अपनी मूँछ काटना भूल गया था और कृष्णजी की प्राणवल्लभा राधिका जी पर मोहित था। रासमण्डल में सखियों व गोपियों के बीच खड़े सखी रूपी राक्षस को कृष्ण जी ने देख लिया था और क्रोधवश उन्होंने अपने सुदर्शन से उसकी नार धड़ से अलग कर दी। बाद में टेसू की कटी हुई नार के द्वारा भगवान श्रीकृष्ण से क्षमायाचना करने पर उसे क्षमा करते हुये यह वरदान दिया कि आज से हर घर में बालकों द्वारा तेरी पूजा एक देवता के समान होगी।[2] ऐसी भिन्न–भिन्न कथाऐं ब्रज के आस–पास के क्षेत्रों में पूजा व खेल के चलन में है।

टेसू के विषय में ऐसा भी मानना है कि जब घर में लड़के का विवाह होता है तो विवाह के समय लड़के पक्ष की तरफ से एक छोटी कूलरी या मटकी में जो भरकर उसको लाल कपड़े में बन्द कर लड़की पक्ष के मण्डप के नीचे रखा जाता है जिसमें से जो निकाल कर चावल भरकर लड़के पक्ष की तरफ वापस करने की रिवाज है और इस कूलरी को लड़की की विदा के साथ लाया जाता है साथ ही कही रास्ते में छोंकर के पेड़ पर, कूलरी के चावल निकालकर उसको उसी लाल कपड़े के साथ पेड़ पर टाँगते हुये बहू घर लाने की रिवाज है। यह छोंकर पेड़ वही माना जाता है जब श्रीकृष्ण ने बभ्रुवाहन का सिर काटा था तो वह इसी पेड़ पर जा लटका था उसने महाभारत का युद्ध भी अपने लटकते हुये सिर से देखा था। इसलिये कूलरी टेसू की प्रेमिका मानकर उसको पेड़ पर लटका आते है। ब्रज में व उसके आसपास के क्षेत्रों व गाँवों में यह छोंकर पेड़ बहुत ही पूजनीय है।

टेसू एक खिलोना है जिसको ब्रज का तथा उसके आस–पास का हर क्षेत्र इस त्यौहार को मनाता है। शहर के लोग इस परम्परा को पूरी तरह भूल ही चुके है लेकिन ब्रज के आस–पास के कुछ गाँव में यह परम्परा अभी तक जीवित है टेसू झाँझी का विवाह बच्चों तथा बुजुर्गों द्वारा रीतिरिवाज व पूरे उत्साह के साथ कराया जाता है। जो इस बात का प्रतीक है कि अपनी प्राचीन परम्परा को सहेजने में गाँव आज भी शहरों से कई गुना आगे है।

चित्र संख्या – 5.1 टेसू

टेसू एक मिट्टी का पुतला होता है जो कि बाँस की तीन खपच्चियों पर मिट्टी से जोड़कर बनाया जाता है तीनों टाँगों के बीच में एक दीपक रखने का दीवला व दो हाथ बनाये जाते है जिसमें एक हाथ को छोटी गगरी समान मिट्टी का हाथ व दूसरे में चिड़िया बना हाथ का रूप दिया जाता है। एक खपच्चि पर मुख या मुखोटा जैसी आकृति बनायी जाती है। इन सभी तीनों खपच्चियों को एक साथ बीच में एक मोटे डोरे से बाँधकर ऊपर से मिट्टी की ये तीनों आकृति से बने रंगों से सजाया जाता है। इसके साथ झैंझी एक छोटी

मटकी होती है जिसके चारों ओर अनेक छिद्र किये जाते है ऊपर से ढ़क्कन लगा दिया जाता है। कच्ची मिट्टी की इस मटकी को कही–कही कूलरी भी बोला जाता है। छेददार इस हाँडी (मटकी) के ऊपर रंगों से रंग कर सुन्दर सजाया जाता है और बीच में एक डोरी जैसी लगायी जाती है जो पकड़ने के लिये सहायक होती है। और इसके बीच में भी एक दीपक की जगह होती है।

नवरात्रि के प्रथम दिन से यह बालकों का त्यौहार विजयादशमी तक चलता है। संध्या के समय बालक टेसू व झैंझी की आरती करने बाद एक जगह इकट्ठे हो जाते हैं, जिसमें छोटी कुमारियाँ भी अपनी झैंझी के साथ होती है। टेसू व झैंझी में दीपक जलाकर अलग–अलग टोलियाँ बनाकर उछलते–कूदते घर–घर जाकर, दरवाजे पर, आँगन में टेसू व झैंझी के गीत गाते–गाते चंदे के लिये जैसे इकट्ठे करते है। कोई उनको अपने दरवाजे से खाली हाथ भगा देता है और कोई–कोई इनको पैसे, प्रसाद व मिठाई देते है। चंदा जोड़ने का मतलब एक ही होता है कि टेसू व झैंझी का विधीविधान से विवाह करना।

चित्र संख्या – 5.2 टेसू झाँझी विवाह संस्कार

ब्रज में बच्चे व बड़े सभी बुजुर्ग इस विवाह में प्रस्तुत होते है। लड़के थाली को बजा–बजा कर बारात निकालते है वही लड़कियाँ भी झैंझी को सुन्दर लाल चुनरी में सजा कर मण्डप में ले जाती है उसके बाद ढोलक की थाप पर मंगल गीतो की बहार शुरू हो जाती है। सात फेरे भी पूरे नहीं हो पाते उससे पहले ही लड़के टेसू के सिर को धड़ से अलग कर देते है और साथ–साथ ही टेसू व झैंझी को बड़े तालाब व जलाशय, नदियों आदि में विसर्जित कर देते है। टेसू झैंझी के गीतों में ज्यादातर भाषा के शब्दों में टेडामेढ़ा पन रहता है। हंसी–मजाक से भरे ये गीत समय–समय पर बालक–बालिकाओं द्वारा रहती है, इनके गीतों का अर्थ भले ही कुछ और हो लेकिन ब्रज लोक में ये गीत मंगल वाचक व मनोरंजन युक्त होते है जो ब्रज में आज भी प्रसिद्ध है। जैसे –

टेसूगीत

1

टेसुरा टेसुरा घण्टार बजइयो, नौ नगरी दस गाँम बसइयो
उड़ गये तीतर फँस गये मोर, मोरन घर खेती भई
खाय मोरनी मोटी भई, मोरनी गई दिल्ली
म्हाँ से लाई दो बिल्ली, एक बिल्ली कानी
सब–बच्चों की नानी, पूँछ पकर कै तानी

2

टेसू ठाड़ौ आँगन में, दे सारे की टाँगन में
टाँग की टँगाई ले, भर बेला मिठाई दै
टाँग गई खेत में, पैसा पाय गये रेत में।

3

टेसू आयो टेसन तें, रोटी खाई बेसन तें
पानी पीयौ फ्रीज कौ, नोट दियो बीस कौ

4

टेसू कूँ लोमड़ी काट गई, ओ मइया,
दद्दू की हड़ियाँ चाट गई, ओ मइया
हड़िया धरी खटिया पै, चल परी बरात

5

मेरो टेसू यही खड़ो, खावे माँगे दही बड़ो
टेसू मेरो सूख गयो, ओयऽऽऽ एक टाँग पै खड़ो–खड़ो

6

टेसू की गइयाँ कच पैदरियाँ, असी डला भुस खाँय
भरे ताल को पानी पी जाँय, तौउ प्यासी जाँय

7

टेसू राजा ठाडे द्वार, नौ दिना कूँ आये द्वार
खायबे मांगे रोटी साग, घर–घर डोलें हाथ पसार

8

इमली की जड़ में ते निकसी पतंग,
नौ सौ मोती नौ सौ रंग
एक रंग मैंने माँग लिया, चढ़ घोड़े असबाड किया
कीया है भई कीया है, दिल्ली जाय पुकारा है
दिल्ली का है काला कोट, मार सिकन्दर पहली चोट
चोट गई चूल्हे की ओट, चूल्हों माँगें सौ–सौ रोट
एक रोट घटि, चूल्हौ बेटा लटिग्यौ
चूल्हे में मारो ढक्का, जाय परौ कलकत्ता,
जाय परौ कलकत्ता मूरी को सौ पत्ता[3]

9

टेसू का नाम मुहम्मद पीर
राँदों दरिया बन गई खीर

10

साँझा लाल बनरा को चाले रे बनरा टेसुरा
बनरी से क्या–क्या लाये रे–।। बनरा टेसुरा।।
माया कूँ हँसला, बहिन कूँ तौ कठला, तो
गोरी धन कारी कंठी लाये रे।। बनरा टेसुरा।।
माया वाकी हँसे, बहिन बाकी खिलकै, तौ
गोरी धन रूठी मटकी डोले।। बनरा टेसुरा।।
माया वाकी रोवे बहिन बाकी सुबके, तौ
गोरी धन फूली न समाय रे।। बनरा टेसुरा।।[4]

11

चिकनी मलरिया चिकने लड्डू आय परे सरवर के टट्टू टॉरमटॉग मँजीरा बाजे
लइयो हरिया सन की डोर मारिंगें गिरधारी चोट, गिर्द–मिर्द की ईट पकाई,
लाल चिरयन्ने खाई, एक चिरैया की खेती, खाय खाय छोंकरिया खाय, छोंकरिया
के चारो अण्डा, बेऊ खेलें गड्डम–गड्डा,
एक के बाँधू डोरा, एक बाँधू घुँघरा,
डोरा डोरा टूटत जाय,
मोरा बैठो कुंड में, दे सारे के मूँड में।

12

एक नकटी दो बुच्चे कॉन, छज्जे बैठी चाबे पान।
चाब चूब लड़के बहिलावे, या नकटी कूँ लिहाज न आवे।।
रूठि चली पीहर कूँ, पीहर पीसौ पच्द्रह सेर, चून भयो पौने दो सेर।।
घर एक लैरी घर करलै, छान छून कड़ी करलै, आय गये तू घर लै,
पति के नाम कुंतगा लै, पति विचारो बड़ौ गरीब,
आढ़ि भयौ फकीर।।[5]

झैंझी गीत

1

कैसे भरेगी झाँझी आगरे को पानी
जौं तक ससुर आगरे जाये
तौं तक सासु हलुआ खॉय। कैसे.
जौं तक जेठ नौकरी जाय
तौं तक जिठानी पूआ खाय। कैसे.
जौं तक देबर बरेली जाय
तौ तक दौरानी इमली खाय। कैसे.

2

झैंझी तेरे फूल पचासी तेरी डाँडी
इन भइयन मैं को को
गोरे गोरे गिरदन बारे
बिरन हमारे।

3

मेरे भइया के दरबार झैंझी मेरी आन खड़ी
लाओ बौहरिया भीख बिटरिया तौ उलट पड़ी
भर सूप ऑखत लायीं तो चंदन रपट पड़ी
जितने ही ऑखत हो पर उतने ही जनियों पूत
पूतन जन जन घर भरो, बहुअन राम रसोई
नाति पढ़े चट सार तो पन्तिन भीर भई।

4

मेरी झुंझिया को नाम बसन्तिया रे
झुंझिया माँगन चली
दे चना के अटकन डारौ–बटकन डारों
छान–छून तेरे आगन डारू
माढ़ैगी की नॉय रे धीमर की बिटिया। दे चना.
धोय धाय तेरे आगे डारौ
काटेगी की नॉय रे धीमर की बिटिया। दे चना.
चौकी पै के लहरे डारौ
सोवेगी के नॉय रे धीमर की बिटिया।

5

कूलरी रे कूलरी, कूलरी में डोरा
फस भर कै नाज देयो, परसो होयगों छोरा

6

झैंझी आँयी भिक्षा मॉगन, चमकत–दमकत गलियन में
नाचे–गामे आँगन में, भर बेला मोय नाज देउ
तबहीं जायें दरबज्जे से

7

झैंझी अटर चले झैंझी बटर चलें
झैंझी लें कैयी टरे

8

झैंझी री घण्टारो लइयो
तब मेरी झैंझी को ब्याह करइयो

गाड़ी भरकै सोना लइयो
तब मेरी झैंझी को ब्याह करइयो
घर भर के पैसा दइयों
तब मेरी झैंझी को ब्याह करइयो

9

चाकी तन मैंने धनियो बोयौ, हाँ सहेली धनियों बोयौ
बा धनियें ने किल्ला फोड़े, हाँ सहेली किल्ला फोड़े
बो धनियो मैंने गऊऐ चरायौ, हाँ सहेली गऊ चरायौ
गऊ ने दीनों दुग्धा, हाँ सहेली दुग्धा
बा दुग्धा तें मैंने खीर बनाई, हाँ सहेली मैंने खीर बनाई
बो खीर मैंने भइया चखाई, हाँ सहेली भइया चखाई
भइया नें दीनों रूपिया, हाँ सहेली रूपिया
बा रूपिया की मैंने चूड़ी पहनी, हाँ सहेली चूड़ी पहनी
चूड़ी मेरी चमकनी, सास मेरी मटकनी।[6]

10

बाबा जी के चेला चेली भिक्षा माँगन आये जी।
भरि चुटकी मैंने भिक्षा डारी, चूँदरिया रंगि लाये जी।
चूँदरिया की उरकन मुरकनि द्वै–द्वै मोई पाए जी।
वे मोती मैंने सासु को दिखाऐ जी।
सासु की पूति ने लै पत्थर दे फौरे जी।
सासु के जाए लेंदी पैंदा कदुआ से लुढकाएं जी।
माय के जाय कुँवर कन्हैया भरि भरि गोद खिलाये जी।
वे मोती मैंने मइया जाय दिखाए जी।[7]

11

माँ! भैया कहाँ–कहाँ ब्याहे, पारेवरिया? माँ! भाभी कौ मुहडौ कैसौ पारेवरिया?
नाक चना सी, मुँह बटुआ सौ, घूंघट में मन लाई, पारेवरिया।
थौरौ खानी बहुत कमानी, जे जुग बीती गई, पारेवरिया।।
माँ! भाभी का–का लाई, पारेवरिया?
आठ बिलैया, नौ चकचूदर सोलह मूसे लाई, पारेवरिया।।[8]

5.2 न्यौरता व साँझी –

क्वार के शुक्ल पक्ष में न्यौरता व साँझी ब्रज में बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। ब्रज की छोटी–छोटी कंवारी कन्यायें देवी पूजा को खेल रूप में मनाकर इस परम्परा को आज भी जीवित बनाये हुये है। इसके लिये कन्याये घर की किसी दीवार पर देवी माता (न्यौरता) बनाती है जिसे कहीं–कहीं सिमरा–सिमरिया भी कहते है। दीवार पर बड़ी देवी का चित्र बनाती है और यह भी मलिनियाँ कहा जाता है। इस खेल में एक मिट्टी का छोटा सुन्दर घर भी बनाया जाता है जिसके ऊपर मिट्टी के दो न्यौरता–न्यौतिया (सिमरा–सिमरिया) को बिठाते है जिसको सुन्दर लीप–पोतकर रंगों से सजाया जाता है। घर के ठीक ऊपर दीवाल पर बड़ी सी देवी (मलिनियाँ) बनायी जाती है, जिसके दो हाथ, दो पाँव, कौड़ी से दो आँख व नाक बनायी जाती है, लहँगे की आकृति में लहंगा जैसी आकृति व चुनरी, सब मिट्टी से बनाते है।

चित्र संख्या – 5.3 न्योरता

घर की स्त्रियों की चूड़ियों से न्यौरता देवी को चूड़ियाँ पहनाते है। कान में कुण्डल, गले में हार, पाँव में पायल, माँग टीका के साथ पूरा श्रृंगार कर सुन्दर रूप में इस देवी को बनाया जाता है। गाँव की कुंवारी कन्यायें प्रत्येक दिन नयी दो गौरे बनाती है और इनको उसी के घर के नीचे एक गड्डा खोदकर उसकी पार पर बैठा देती है। इनके साथ कन्यायें अपनी इच्छानुसार मिट्टी की पाँच या सात गोलियाँ बनायी है जो हर दिन गीतों के साथ गड्डे में गोलियों को डालती है और सायं काल में दीपक जलाकर आरती करती है, गीतों में ये देवी गीतों को ज्यादा प्राथमिकता देती है। नवरात्रि में कन्यायें नौ दिनों तक का यह त्यौहार ब्रज के गाँव में आज भी धूमधाम से मनाती है। दसवें दिन (दशहरा) कन्यायें न्यौरता न्यौतिया का विवाह कर किसी जलाशय में विसर्जित कर देती है। किसी–किसी गाँव में मिट्टी के घर में दोनों तरफ से सीढ़ियाँ भी बनाती है। इसके अलावा एक चंडोल भी बनता है जिसको चार लकड़ी या सिरकंडे से बनाया जाता है चारों ओर जालीदार मिट्टी वाले सिरकंडे को बनाते हुये ऊपर छोटी छत बनायी जाती है जिसके ऊपर दीपक जलाया जाता है। जिसमें प्रत्येक दिन संध्या बाती की जाती है। इस त्यौहार में कन्यायें अपने अच्छे घर–वर की प्रार्थना करती है और नौ दिनों तक उपवास रख देवी गीतों का गुणगान करती है। इस खेल में कन्यायें कुछ तो दरबाजे के अन्दर खड़ी होती और कुछ बाहर रहती है जिसमें न्यौरता देवी के दरबाजे को खटखटाते हुये गीत गाती है–

गौरा खोलो न किबाड़
बिटियाँ खड़ी है दरबार
गौरा काहे पै रूठी
सोई देंगे बनवाय। गौरा खोलो न.....
गौरा टीका पै रूठी
टीका देंगे बनवाय। गोरा खोलो.....
गौरा काहे पै रूठी

सोई देंगे बनवाय। गोरा खोलो.....

गौरा हसली पै रूठी

हसली देंगे बनवाय। गौरा.....

(आगे सभी आभूषणों के नाम लेते जाते है)

दूसरी विधि के गीतों में कन्यायें, जब सुबह पूजा के लिये जाती है तो सबसे, पहले देवी पर पड़े पर्दे को खोलते समय इस गीत को जाती है–

अपनी गौरी की ऑई, देखूं झॉई देखूं

का का पैरे देखूं–

टीका पैरे देख, नथनी पैरे देखूं। अपनी....

हसला पैरे देखूं, चुरियाँ पैरे देखूं। अपनी....

(आगे सभी आभूषणों के नाम लेते जाते है)

देवी गीत

1

मेरे नौ दिन के मेहमान सारदा बैठी रहियो जाइ मन्दिर में।

तुम्हें भूख लगे हमसे कहियो

तुम्हें भोजन दिये मँगाई। सारदा.....

तुम्हें प्यास लगे हमसे कहियो

तुम्हें पानी दिये मँगाई। सारदा.....

तुम्हें नींद लगे हमसे कहियो

तुम्हें बिस्तर दिये मँगाई। सारदा.....

2

सोने कौ मंदिर जामे चाँदी को दरवाजो

जामे रहमें नौऊ बहिना जरा देखन दे। सोने.....

सौने का लोटा गंगाजल पानी

पीवे पीवे नौऊ बहिना जरा देखन दे। सोने.....

सोने की थाली में भोजन परोसे

खामे खामे नौऊ बहिना जरा देखन दे। सोने.....

ढोल मजीरे जामे मृदंग बजत है

नॉचे–नॉचे नौऊ बहिना जरा देखन दे। सोने.....

3

नौ दिन नौदिन नौदिन मइया जी तुम्हें नौ दिन मुबारक हो

सिर मइया के टीका सोवे,

बेंदी, बेंदी, बेंदी मइया जी तुम्हें बेन्दी मुबारक हो। नो दिन.....

गले मइया के हसली सोवे

लरियाँ, लरियाँ, लरियाँ मइया जी तुम्हें लरियाँ मुबारक हो। नौ दिन.....

हाथ मइया के चूड़ी सोवे

कंगन कंगन कंगन मइया जी तुम्हें कंगन मुबारक हो। नौ दिन.....

4

कैसी बैठी बिकट पहाड़न में जय जगदम्बे मइया।

टीका तो मइया धरो रे भवन में

अब तेरी झूमर उलझी झाड़ीन में। जय जगदम्बे.....

हरबा तो मइया धरो रे भवन में

अब तेरी लरियाँ उलझी झाड़िये। जय जगदम्बे.....

चूड़ी तो मइया धरी रे भवन में

अब तेरे कंगन उलझे झाड़िन में। जय जगदम्बे.....

(इसमें सभी आभूषणों के नाम लिये जाते है।)

5

उठो मैया नयन खोलो

भिखारी दर पै आया है

मैया द्वारे, एक अन्धा पुकारे

नयन दे दो चला जाये

भिखारी द्वारा आया है। उठो.....

मैया द्वारे एक लंगड़ा पुकारे

टाँगें दे दो चला जाये

भिखारी दर पै आया है। उठो.....

मैया द्वारे एक कन्या पुकारे

घर–वर दे दो चली जाये

भिखारी द्वार पै आया है। उठो.....

6

कैसे सजा हाय कैसे सजा

फूलों बिन मन्दिर कैसे सजा

मइया के द्वारे एक अन्धा पुकारे

कैसे जिये हाय कैसे जिये

नयन बिन अंधा कैसे जिये। कैसे सजा.....

मइया के द्वारे एक लंगड़ा पुकारे

कैसे जिये हाय कैसे जिये

पैरो बिन लंगड़ा कैसे जिये। कैसे सजा.....

मइया के द्वारे एक लड़का पुकारे

कैसे जिये हाय कैसे जिये

शिक्षा के बिना लड़का कैसे जिये। कैसे सजा.....

मइया के द्वारे एक लड़की पुकारे

कैसे जिये हाय कैसे जिये

घर–वर के बिना लड़की कैसे जिये। कैसे सजा.....

7

मन्दिर में मइया भक्तों से झगड़ी

तुम क्यों नहीं लाये रे गोटे चुंदरी।

एक अन्धा आयेगा वो नैना मांगेगा

उसी से लेलेना गोटे चुंदरी। मन्दिर में मइया.....

एक लड़का आयेगा वो शिक्षा मांगेगा

उसी से ले लेना गोटे की चुदरी। मन्दिर में मइया.....

एक लड़की आयेगी वो घर–वर मांगेगी

उसी से ले लेना गोटे की चुंदरी। मन्दिर में मइया.....

<u>लांगुरिया</u>

1

चरखी चल रही बर के नीचै

आ जइयो मंदिर के पीछै

तोय भर के दऊ गिलास

कि रस पी जा लांगुरिया।

भरी दुपैहरी टपकै पसीना

नींबू के संग दऊ पुदीना

तेरी मिटा दऊ सब प्यास कि रस पी जा लांगुरिया.....

और यार मत संग में लइयो

इकलौ आइ कै रस पी जइयो

तेरी मोकूँ आस। कि रस पी जा.....

2

देख, पल्लू छोड़ दे लांगुरिया बतासो दूँगी तोय, पल्लू छोड़ दे

टीका तो अपने माइकै तै लाई,

बैंदी देख जरो मत जाय, पजरो मत जाय, पल्लू छोड़ दें

कॉलर तौ अपने माइके तैं लाई

पैन्डिल देख जरो मत जाय, पजरो मत जाय, पल्लू छोड़ दें

कंगना तौ अपने माइकै तै लाई,

चुरियाँ देख जरो मत जाय, पजरो मत जाय, पल्लू छोड़ दे

(सभी आभूषणों के नाम लेते जाते है)

3

अररर सररर करकै लांगुरिया मोय

लै गयो रेल में धरकै

सोने कौ लोटा गंगा–जल–पानी

पीवन न दियौ मन भरकै। लांगुरिया.....

सोने की थाली में भोजन परोसे

जेबन न दीयौ मन भरकै। लांगुरिया.....

4

मैंने रांदोये चना कौ साग लांगुरिया

बलम रूठ गये सबजी पै

मेरी सास मनामे नॉय माने

मेरे ससुर मनामें नॉय माने

और मेरो मनावो सींग लंगुरिया। बलम.....

(सभी के लिये ऐसे ही बोलते जाते है)

5

शंकर पार्वती के संग कबड्डी खेले लांगुरिया

बागउ हार बगीचऊ हारे अब का हारोगे

अब सान तुम्हारी जबही रहे जब मालिन हारोगे। शंकर.....

तालउ हार तलइयो हारे अब का हारोगे

अब सान तुम्हारी जबहि रहे जब धोविन हारोगे। शंकर.....

6

मक्का बोय दयी बारह बीगा में ना आई भुटिया

सास–ससुर मेरे घर में सोवें दें दें टटिया

और हम लांगुर बरहे में डोले लें लें लठिया। मक्का.....[9]

(सभी के लिये ऐसे ही कहते जाते है।)

साँझी –

अश्विन (क्वार मास) का सबसे प्रसिद्ध समारोह ब्रज में क्वारियों द्वारा मनाया जाता है। ब्रज में साँझी रूपों में मनायी जाती है। एक लोक उत्सव दूसरा धार्मिक उत्सव अलग–अलग कलाकृतियों में यह उत्सव ब्रज में मनाया जाता है। ब्रज में साँझी को एक लोक देवी के रूप में पूजा जाता है। साँझी की आरती व पूजा संध्या के समय की जाती है। इसलिये इसको साँझी कहा जाता है। ब्रज संस्कृति की अपनी यह विशेषता है कि इसे परम्परागत रूप में मनाया जाता है। ब्रज की परम्परा में गोबर द्वारा दीवाल पर कुंवारी कन्याओं द्वारा साँझी माता का चित्र बनाया जाता है। पितृ पक्ष में साँझी बनाना यहाँ का महत्वपूर्ण पक्ष होता है। 15 दिनों तक प्रतिदिन नये–नये रूपों में बनाया जाता है। गोबर, फूल, पन्नी आदि से साँझी माता को बनाया जाता है।

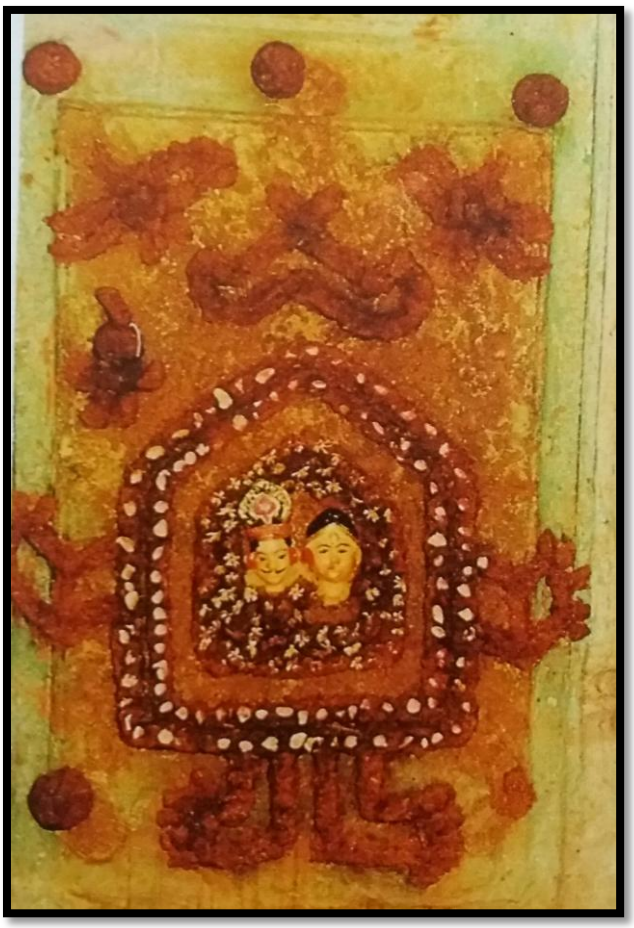

चित्र संख्या – 5.4 साँझी

साँझी त्यौहार की यह परम्परा कुंवारी कन्याओं से संबंधित है जिसमें विवाह से पूर्व वे पूरे उत्साह के साथ प्रतिवर्ष बनाती है। विवाह के पश्चात् प्रथम वर्ष में ही साँझी का उद्यायापन करती है तथा 16 घरों में जाकर साँझी की पूजा करती है और बाद में वही 'मंसापूजी' की सामग्री उसके ससुराल भेज दी जाती है।

डॉ. राजेश कुमार शर्मा ने अपनी पुस्तक 'ब्रज की साँझी के पृष्ठ सं.–27 पर साँझी के एक कथानक के विषय में बताया है कि साँझी का अंकन एक ऐसी नायिका के रूप में किया जाता है जो पितृ पक्ष में अपने भाई के साथ ससुराल से पीहर आ जाती है। किन्तु पीहर में थोड़े दिन रहने के उपरान्त वह पति के विरह में व्याकुल होने लगती है। कुछ समय बाद उसका पति उसे विदा कराने हेतु आता है और वह दस दिन ससुराल में रहकर दशहरे के दिन साँझी को विदा कराकर ले जाता है। इस कथा को केन्द्र में रखकर ब्रज के ग्राम्यांचल में कुंवारी लड़कियों के द्वारा पितृ पक्ष के दौरान गोबर से प्रतिदिन दीवार पर नये–नये अंकन किये जाते हैं जिन्हें फूल, कौड़ी, पीतर पन्नी, रोली एवं रंगों द्वारा सज्जित किया जाता हैं।[10]

इसी कथा के पूजन करने में बालिकाओं की यह मनोकामना रहती है कि उन्हें साँझी माता की कृपा से योग्य वर और चिर सौभाग्य की प्राप्ती हो तथा दाम्पत्य जीवन सुखी रहे।

डॉ. प्रभुदयाल मीतल ने अपनी पुस्तक 'ब्रज के उत्सव, त्यौहार और मेले' में भी साँझी के चित्र में प्रतिदिन जिन नये–नये भावों को बनाया जाता है, उनके क्रम को समझाया है –

प्रथम दिन भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को बीरन बेटी बनाई जाती है और थापे रखे जाते है। जो साँझी के पिता के घर से ससुराल में बनते है। दूसरे दिन एक डोले में बैठी स्त्री बनायी जाती है जो उसके पीहर का प्रतीक है। तीसरे व चौथे दिन तिवारी बना साँझी को बिठाते है। पाँचवे दिन चतुर्थ चौपड़ बनायी जाती

है। छटवें दिन पंचमी को पान–सुपारी तथा सातवें दिन छट को मिठाई से भरी एक डलिया बनायी जाती है और इसी प्रकार साँझी को सत्कार प्रदान कर स्वादिष्ट व्यंजनों द्वारा का भोग लगाया जाता है। आठवें दिन सप्तमी को मंगल सूचक स्वस्तिक चिन्ह अंकित किये जाते है।

अष्ठमी को नवें दिन अठकठिया फूल तथा नवमी को दसवें दिन नाव अथवा नारियल द्वारा प्राकृतिक भ्रमण, ग्यारहवें दिन दशमी को दस पान बना कर साँझी को प्रिय वस्तु तथा एकादशी को 21 सिंघाड़े बना कर उसे व्रत की सामग्री प्रदान की जाती है। घर में होने वाले बड़े श्राद्ध से एक दिन पहले पातल–दौना बनाये जाते है, जो साँझी के परिवार में होने वाले श्राद्ध के सूचक है। द्वादशी को साँझी को फरिया–ओढ़नी पहिनाने का प्रलोभन दिया जाता है, किन्तु पति वियोग में इस सब चीजों से वह सन्तुष्ट प्रतीत नहीं होती और त्रयोदशी को चोदहवें दिन पति के वियोग में व्याकुल नसैंनी या खजूर के पेड़ पर निहारती है कि उसके पति के देश से कोई आ तो नहीं रहा।

पंद्रहवें दिन एक लंगड़ा ब्राह्मण और कौआ बनाये जाते है, जो साँझा के आगमन की सूचना देते है। अन्तिम दिन अमावस्या को 'नगर कोट' बनाया जाता है। यह को साँझी व उसके पति मिलन का प्रतीक होता है। यह कोट मिट्टी द्वारा बनाये गये आभूषणों, कौड़ी, कटोरी, शीशे के टुकड़ों, चाँदी के रूपयों, पन्नी आदि से बनाये जाते है। अमावस्या को नटवर कोट, पूजन कर बंधाऐ गाये जाते है। विजय दशमी को दीवार से हटाकर किसी जलाशय में विसर्जित कर दिया जाता है। यह त्यौहार भी न्यौरता के जैसा होता है इसमें भी कन्यायें कुछ मिलते–जुलते गीत गाती है जैसे–

1

जाग माई, माई, खोल किबाड़। मैं आई तेरे पूजन द्वार।।
पूजि–पुजंतर बेटी, का फल माँगे? भैया भतीजे सम्पति होइ।
भैया चाहिय, नौ–दस–बीस। भतीजे चाहिये पूरे बत्तीस।।

2

साँझी भैंना री, का ओढ़ेगी, काहे को सीस गुँथावेगी?

मैं तो सालू ओढूंगी, लहँगा पहिरूगी, मोतियन की माँग भराऊंगी।[11]

3

मेरी साँझी के ओरे–धोरे,

फूल रही फुलवारी, मैं तोय पूँछू

साँझी बहना कै ऐ तेरे भाई,

मेरे नौ दसन कौ अंजर–पंजर

एक साँझा भाई मेरी साँझी.....[12]

4

औलाती तर जो बऐ सगुनो, उपजै नौ दस पेड़ रे सगुनौ।

एक ललाजू के सात बहुरिया, तौ एक तें एक मलूक सगुनौ।।

एक ललाजू की गोबरो करतिऐ, तौ एक ऊँचामन जाइ सगुनौ।

तीजी ललाजू की पानी भरतिसै, तौ चौथी खेंचन जाइ सगुनौ।

पाँचयी लालाजू की रोटी पैवतिऐ, तौ छटई परोसन जाइ सगुनौ।

एक ललाजू की बौहोतई प्यारी, तौ पलिका तैं पॉम न देई सगुनौ।।

फूल बिटोरा है गई सगुनौ तौ हारके द्वार न समाई सगुनौ।

ज्याई गॉम बढ़ईऐ बोलो, तो घर के द्वारा छिलाई सगुनौ।।[13]

5

मेरी साँझी के औरे–दौरे हरी–हरी चौराई

मैं तोय पूछूँ साँझी भैंना कै तेरे भाई?

मेरे पाँच री पचास मेरे नौ दस भाई

अरी नौऊ–दसन को अंजन–मंजन

साँझा मेरौ भाई।[14]

ब्रज के मंदिरों देवालयों और सांस्कृति स्थलों पर साँझीके सूखे रंगों तथा कागज के कटे हुये साँचों से भिन्न–भिन्न डिजायन, बेल, बूटे, पशु–पक्षी, फूल–पत्ती, मंदिरों में मिट्टी के बने बड़े आकार के अठपहलू के ऊपर बनाया जाता है। इसे सूख जाने के बाद श्रीकृष्ण की सुन्दर लीलाऐं इसके 'हौद' (मध्य भाग) में बनायी जाती है कहीं–कहीं राधा कृष्ण की रास लीला का तो कही कलियादह का। इस तरह सूखे रंगों की ये साँझी ब्रज के मंदिरों में अलग–अलग लीलाओं में देखने को मिलती है। इसके साथ सन्धा बेला में फूल साँझी बनायी जाती सुन्दर सुगन्धित अलग–अलग रंगों के फूलों से धरातल पर भिन्न कलाकृतियों में साँझी बना बीच ('होद') में राधाकृष्णा की छवि को लगाते है। यह छवि मंदिरों में संध्या बेला में ही आरती के समय देखने को मिलती है। मंदिरों में अलग–अलग साँझी के पद भी गाये जाते है, गीत संगीत से मंदिरों में मनमोहक दृश्य बना रहता है। पानी के ऊपर तथा पानी के नीचे अलग–अलग साँझी क्वारी के पितृ पक्ष में देखने को मिलती है। मंदिरों में भक्तों की भीड़ राधा कृष्ण को इस साँझी रूप में देखने में हमेशा बड़ी रहती है। गीत संगीत की धुन हमेशा गूँजती रहती है।

चार–पाँच सौ वर्ष पुराने वाणी–साहित्य में फूल–साँझी रचना के प्रमाण–

1

चलति चाल मराल–बाल सी राधा सखियन साँझ।
बीनति फूलनि जमुना–कूलनि खेलत साँझी साँझ।
मृगनंद चंदन केसर सों, स्यामा जू लीपी भीत।
कामधेनु के गोबर सों, रचि साँझी फूलन चीत।।
धूप दीप धरि भोग अमृत रस आप आरती उतारि।
गावत गीत पुनीत किशोरी श्रीवृषभान कुमारि।।[15]

2

अरी–अरी साँझी सुहार खिलारिन, मन थिर नाहिं, दृष्टि फिरत तिरछौंही।
टरित न नौंक दाहिनी–बाई, मैं परखी है, रहति कुँवरिजू की सौंही।।
सबनि डर्‌यौ सौ पायौ तो मिलि, मोहि लगति कछु उर–उरझौंही।
वृन्दावन हित रूप सवादिन, रंग साँवरी, फिरति आपुनी गौंही।
वारी–वारी मैं किशोरी! कर लाघवता, तेरी सी न निहारी।
कै यह मिली भाग्य बल सजनी, तन चटकीले, साँझी चीतनिहारी
आई निपट डार की सी टूटी, शोभा–निकर गुनीली भारी।
वृन्दावन हित रूप धन्य, विधना किहिं रचिपचि, जोरी यह जु सँवारी।।[16]

5.3 ब्रज मण्डल के लोकोत्सव गीतों का लोकोत्सव कलाओं में परस्पर सम्बन्ध

ब्रजमण्डल के लोक जीवन शैली में संगीत कला अतः संगीत एवं लोककला का परस्पर सम्बन्ध ब्रज के उत्सवों व त्यौहारों के आधार पर विकसित हुयी है तो लोक संगीत भी उन्हीं उत्सवों के गीत संगीत के आधार पर एक–दूसरे को परस्पर सम्बन्ध जोड़ता है। लोक नृत्य लोक जीवन की शैली का आधार है। ब्रज की लोक संस्कृति में ब्रज की पारम्परिक कला और वहाँ के लोक साहित्य का संगीत वहाँ के सामाजिक लोक जीवन को व्यवस्थित करता है। यदि लोक संगीत की परिभाषा दी जाये तो हमारे निकटतम जीवन शैली से उद्‌भव होने वाला संगीत हमारे क्षेत्र व गाँव की संस्कृति को जोड़ता है। संस्कृति में साहित्य, संगीत व कला का परस्पर सम्बन्ध आवश्यक है वहाँ हमारे क्षेत्रीय लोक जीवन पर पाश्चात्य शैली का प्रभाव गहराई से पड़ रहा है किन्तु हमारे वास्तविक जीवन को दृष्टिगत करने के लिये हमारे क्षेत्रीय संगीत एवं क्षेत्रीय कला ही हमारी व्यक्तिगत पहचान स्वरूप है। लोक उत्सवों में गाये जाने वाले गीत कहीं न कहीं लोक कला से सम्बन्ध रखते है।

उदाहरण – टेसू झैंझी के गीत जहाँ श्रव्य कला में आते है वही दृश्य कला में टेसू झैंझी के मिट्टी के खिलौने वाले रूप लोक कला में आते है। लोक संगीत व लोक कला एक–दूसरे में पूरी तरह विद्यमान है। वहीं उन ब्रज कथाओं में कृष्ण लीला ब्रज के भक्त कवियों द्वारा प्रस्तुत अनेक दोहे, कविन्त, साहित्य से हमें संस्कृति के भावों का अनुभव मिलता है। ब्रज के अनेक मंदिरों में प्रस्तुत भीति चित्रों में कला व संगीत दोनों ही दिखाई पड़ते है। लोक संस्कृति से सम्बन्धित भीति चित्रों, भूमि चित्रों, तीज त्यौहारों के अनुरूप व लोक संगीत के सम्बन्धित चित्र दीवालों ब्रज के ग्रामीण अंचलों में देखने को प्रायः ही मिलते है अधिकतर भूमि चित्रण अलंकृत उत्सव व त्यौहार सम्बन्धित होते है। ये चावल के पीठे, आटा, गैस, हल्दी व विभिन्न रंगों से तैयार होते है। त्यौहार सम्बन्धित मुख्य देवी–देवता का चित्रण बीच में खड़े आकार का होता है। लोक कथाओं से सम्बन्धित वस्तुऐं बाद में चित्रित होती है, सूर्य व चन्द्रमा की आकृति प्रायः सभी भीती चित्रों में होते है। पक्षियों में मोर, चिड़ियाँ, तोता, जानवरों में हाथी, घोड़ा, ऊँट प्रमुख है। शुभ चिन्हों में सबसे अधिक प्रयोग स्वास्तिक ऊँट व कमल के फूल होते है। देवताओं का चित्रण त्यौहार सम्बन्धी होते है। सबसे अधिक खिलौने राधा कृष्ण से सम्बन्धित होते है।

मंदिरों और घरों में भूमि पर रंग साँझी, जल साँझी, केले के पत्तों की साँझी, फूल साँझी, घर में गोबर साँझी, मिट्टी की साँझी आदि कला ब्रज में ब्रजवासी आज भी बनाते है और उनसे सम्बन्धित साँझी के गीत, राधा कृष्ण के भजन व गीत गाये जाते है। श्रीकृष्ण से सम्बन्धित गोवर्धन महाराज को मंदिरों व घरों में गोबर से भूमि पर गोधन महाराज बनाये जाते है जो श्रीकृष्ण का ही रूप है। उनसे सम्बन्धित उनके गीत भी गाये जाते है। और जोर–2 से जयकारे लगाये जाते है। ऐसे ही दिवाली पर, करवाचौथ पर, करवा चौथ माता का चित्र दीवाल पर बनाया जाता है कथा व गीत गाये जाते है साथ ही विधी विधान से पूजा की जाती है।

अहोई अष्ठमी पर देवोत्थान आदि पर चित्र बनाकर रोली, चावल के पीछे विभिन्न देवी–देवताओं के चित्र व रंगोली बनायी जाती है इन सभी लोक कला के साथ गीत संगीत जुड़ा रहता है। होली के उपरान्त घर के आँगन में गोबर से लीपकर तरह–तरह के चौक बनाये जाते है। होली के गीतों में रसिया, ध्रुपद, धमार आदि के साथ लोक वाद्यों की धूम रहती है होली की हुड़दंग में सभी जाति के व्यक्ति भाग लेते है। ये सभी लोक उत्सव लोक संगीत और लोक कलाओं के पारस्परिक सम्बन्ध को आपस में जोड़े रखता है। लोक संगीत का आनन्द लोक कलाओं में ही आता है। ये त्यौहार एक दूसरे के पूरक है। इनके बिना लोक उत्सव अधूरे माने जाते है।

सन्दर्भ सूची –

1 वर्मा, डॉ. विमला एवं जितेन्द्र सिंह (1995), ब्रज की लोक कलाऐं, संस्कृति विभाग, लखनऊ, उ.प्र., पृ.सं.–20

2 तिवारी, लक्ष्मीनारायण, चौमासा, वृन्दावन शोध संस्थान, पृ.सं.–63

3 लोकजन श्रुति द्वारा (सर्वेक्षण द्वारा)

4 तिवारी, लक्ष्मीनारायण, चौमासा, वृन्दावन शोध संस्थान, पृ.सं.–64

5 अग्रवाल, स्व. रामनारायण (2001), ब्रज की लोक गाथाएँ और कथागीत (भाग–2), प्रकाशन ब्रज कला केन्द्र, मथुरा, पृ.सं.–403–405

6 लोकजन श्रुति द्वारा (सर्वेक्षण द्वारा)

7 गर्ग, डॉ. लक्ष्मीनारायण (2009), ब्रज संस्कृति और लोक संगीत, संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ.सं.–201

8 मीतल, डॉ. प्रभुदयाल, ब्रज के उत्सव, त्योहार और मेले, साहित्य संस्थान, मथुरा, पृ.सं.–45

9 लोकजन श्रुति द्वारा (सर्वेक्षण द्वारा)

10 शर्मा, डॉ. राजेश कुमार (2014–15), ब्रज की साँझी, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन, पृ.सं.–27

11 मीतल, डॉ. प्रभुदयाल, ब्रज के उत्सव, त्योहार और मेले, साहित्य संस्थान, मथुरा, पृ.सं.–43–45

12 आचार्य, डॉ. सुनीति (2012 अक्टूबर, 2013 मार्च), ब्रज सलिला, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन, पृ.सं.–54

13 शर्मा, श्रीमती सुनीता (2001), ब्रज के लोक गाथायें और कथागीत भाग (2), सम्पादक स्व. रामनारायण, ब्रज कला केन्द्र, मथुरा पृ.सं.–206

14 शर्मा, डॉ. राजेश कुमार (2014–15), ब्रज की साँझी, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन, पृ.सं.–42

15 बंसल, डॉ. नरेशचन्द्र (जनवरी–मार्च 2001), ब्रज सलिला, वर्ष–1, वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन, पृ.सं.–14–15

16 श्रीहित चाचा, वृन्दावनदास जी की वाणी, रसभारती संस्थान, वृन्दावन, पद संख्या 60–61